NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2019

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER I

Time: 2 hours

80 marks

PLEASE READ THE FOLLOWING INSTRUCTIONS CAREFULLY

1. This question paper consists of 8 pages. Please check that your question paper is complete.
2. Read the instructions to each question carefully.
3. Answer all sections.
4. All answers must be written in the Hindi script.
5. You may use the last 4 pages of the Answer Book for rough work. Cross out all rough work before handing in your answer book.
6. It is in your own interest to write legibly and to present your work neatly.

IEB Copyright © 2019

भाग क

प्रश्न एक

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में हिन्दी में दीजिए ।

प्रदूषण

स्तावना : विज्ञान के इस युग में मानव को जहां कुछ वरदान मिले है, वहां कुछ अभिशाप भी मिले हैं। प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप हैं जो विज्ञान की कोख में से जन्मा हैं और जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर हैं।

प्रदूषण का अर्थ : प्रदूषण का अर्थ है -प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य मिलना, न शांत वातावरण मिलना।

प्रदूषण कई प्रकार का होता है! प्रमुख प्रदूषण हैं - वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण और ध्वनि-प्रदूषण ।

वायु-प्रदूषण : महानगरों में यह प्रदूषण अधिक फैला है। वहां चौबीसों घंटे कल-कारखानों का धुआं, मोटर-वाहनों का काला धुआं इस तरह फैल गया है कि स्वस्थ वायु में सांस लेना दूभर हो गया है। मुंबई की महिलाएं धोए हुए वस्त्र छत से उतारने जाती है तो उन पर काले-काले कण जमे हुए पाती है। ये कण सांस के साथ मनुष्य के फेफड़ों में चले जाते हैं और असाध्य रोगों को जन्म देते हैं! यह समस्या वहां अधिक होती हैं जहां सघन आबादी होती है, वृक्षों का अभाव होता है और वातावरण तंग होता है।

जल-प्रदूषण : कल-कारखानों का दूषित जल नदी-नालों में मिलकर भयंकर जल-प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय तो कारखानों का दुर्गंधित जल सब नाली-नालों में घुल मिल जाता है। इससे अनेक बीमारियां पैदा होती है।

IEB Copyright © 2019

ध्वनि-प्रदूषण : मनुष्य को रहने के लिए शांत वातावरण चाहिए। परन्तु आजकल कल-कारखानों का शोर, यातायात का शोर, मोटर-गाड़ियों की चिल्ल-पों, लाउड स्पीकरों की कर्णभेदक ध्वनि ने बहरेपन और तनाव को जन्म दिया है।

प्रदूषणों के दुष्परिणाम: उपर्युक्त प्रदूषणों के कारण मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। खुली हवा में लम्बी सांस लेने तक को तरस गया है आदमी। गंदे जल के कारण कई बीमारियां फसलों में चली जाती हैं जो मनुष्य के शरीर में पहुंचकर घातक बीमारियां पैदा करती हैं। भोपाल गैस कारखाने से रिसी गैस के कारण हजारों लोग मर गए, कितने ही अपंग हो गए। पर्यावरण-प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा आती है, न सर्दी-गर्मी का चक्र ठीक चलता है। सुखा, बाढ़, ओला आदि प्राकृतिक प्रकोपों का कारण भी प्रदूषण है।

प्रदूषण के कारण : प्रदूषण को बढ़ाने में कल-कारखाने, वैज्ञानिक साधनों का अधिक उपयोग, फ्रिज, कूलर, वातानुकूलन, ऊर्जा संयंत्र आदि दोषी हैं। प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ना भी मुख्य कारण है। वृक्षों को अंधा-धुंध काटने से मौसम का चक्र बिगड़ा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से भी प्रदूषण बढ़ा है।

सुधार के उपाय : विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए चाहिए कि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं, हरियाली की मात्रा अधिक हो। सड़कों के किनारे घने वृक्ष हों। आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओतप्रोत हों। कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उनसे निकले प्रदूषित मल को नष्ट करने के उपाय सोचना चाहिए।

[Source: Web Duniya]

१.१ प्रदूशण का अर्थ संक्षेप में लिखिए ? (४)

१.२ किहीं एक प्रकार का प्रदूशण पर चर्चा कीजिए ? (४)

१.३ इन वाक्य को अपने शब्दों में समझाइए ः

१.३.१ प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना । (२)

१.३.२ अंधा धंध को काटने (२)

१.३.३ हरियाली की मात्रा अधिक हो । (२)

१.३.४ विज्ञान के इस युग (२)

१.४ सुधार के उपाय ः" विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए" यह कैसे हो सकता है अपने शब्दों में समझाइए । (६)

१.५ समानार्थी शब्द लिखिए ।

१.५.१ मानव

१.५.२ जनता

१.५.३ वायु

१.५.४ जल (४)

१.६ बिलोल शब्द लिखिए ।

१.६.१ शांत

१.६.२ जन्म

१.६.३ शुध्द

१.६.४ नष्ट (४)

[३०]

भाग ख

प्रश्न दो

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका संक्षिप्त विवरण कीजिए

जो हुआ अच्छा हुआ

अक्सर लोगों को कहते सुना है कि अपना मान-सम्मान, अपना यश-अपयश, अपना सुख-दुख और आनि लाभ आदि सभी कुछ मनुष्य के अपने हाथों ही रहा करता है। एक दृष्टि से यह मान्यता को सत्य एंव उचित भी कहा जा सकता है। वह इस प्रकार कि मनुष्य अच्छे-बुरे जैसे भी कर्म किया करता है, उसी प्रकार से उसे हानि-लाभ तो उठाने ही पड़ते हैं। उन्हें जान-सुनकर विश्व का व्यवहार भी उसके प्रति उसके लिए कर्मों जैसा ही हो जाया करता है, अर्थात अच्छे कर्म वाला सुयश और मान-सम्मान का भागी बन जाया करता है। लेकिन शीर्षक मुक्ति में कविवर तुलसीदास ने इस प्रचलित धारणा के विपरीत मत प्रकट करते हुए कहा है कि-

'हानि-लाभ-जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।' अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य आनि-लाभ, यश-अपयश जो कुछ भी अर्जित कर पाता है। उसमें उसका अपना वश या हाथ कतई नहीं रहा करता है। विधाता की जब जैसी इच्छा हुआ करती है, तब उसे उसी प्रकार की लाभ-हानि तो उठानी ही पड़ती है। मान-अपमान भी सहना पड़ता

IEB Copyright © 2019

है। जीवन और मृत्यु तो एकदम असंदिग्ध रूप में मनुष्य के अपने वश में न रहकर विधाता के हाथ में रहती ही है।

जब हम गंभीरता से प्रचिलित धारणा और कलव की मान्य्यता पर विचार करते हैं, लोक के अनुभवों के आधार पर सत्य को तोलकर या परखकर देखते हैं, तो कवि की मान्यता प्रायः सत्य एंव अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होती है। एक व्यक्ति रात-दिन यह सोचकर परिश्रम करता रहता है कि उसका सुफल पाकर जीवन में सुख भेग और सफलता पा सकेगा, पर होता इसके विपरीत है। विधाता उसके किए-कराए पर पानी फेरकर सारी कल्पनांए भूमिसात कर देता है। एक उदाहरण से इस बात की वास्तविकता सहज ही समझी जा सकती है। एक किसान दिन-रात मेहनत करके फसल उगाता है। लहलहाती फसलों के रूप में अपने कर्म और परिश्रम का सुफल निहारकर मन ही मन फला नहीं समाता। किंतु अचानक रात में अतिवृष्टि होकर या बाढ़ आकर उस सबको तहस-नहस करके रख देती है। अब इसे आप क्या कहना चाहेंगे? हानि-लाभ सभी कुछ वास्तव में विधाता के ही हाथ में है। इसके सिवा और कह भी क्या सकते हैं।

इसी प्रकार मनुष्य अच्छे-बुरे तरह-तरह के कर्म करता, कई प्रकार के पापड़ बेलकर धन-संपति अर्जित एंव संचित करता रहता है।। यह सोच-विचारकर मन ही मन बड़ा प्रसन्न भी रहता करता है कि उसे भविष्य के लिए किसी प्रकार की चिंता नहीं पड़ती। तभी अचानक कोई महामारी, कोई दुर्घटना होकर उसके प्राणों को हर लेती है और उसके भावी सुखों की कल्पना का आधार सारी धन संपति उसे सुख तो क्या देना उसके प्राणों की रक्षा तक नहीं कर पाती। इसमें भी तो विधाता की इच्छा ही मानी जाती है।

[Source: E Virtual Guru]

[१0]

भाग ग

प्रश्न ३

निम्न विज्ञापन को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न का उत्तर दीजिए ।

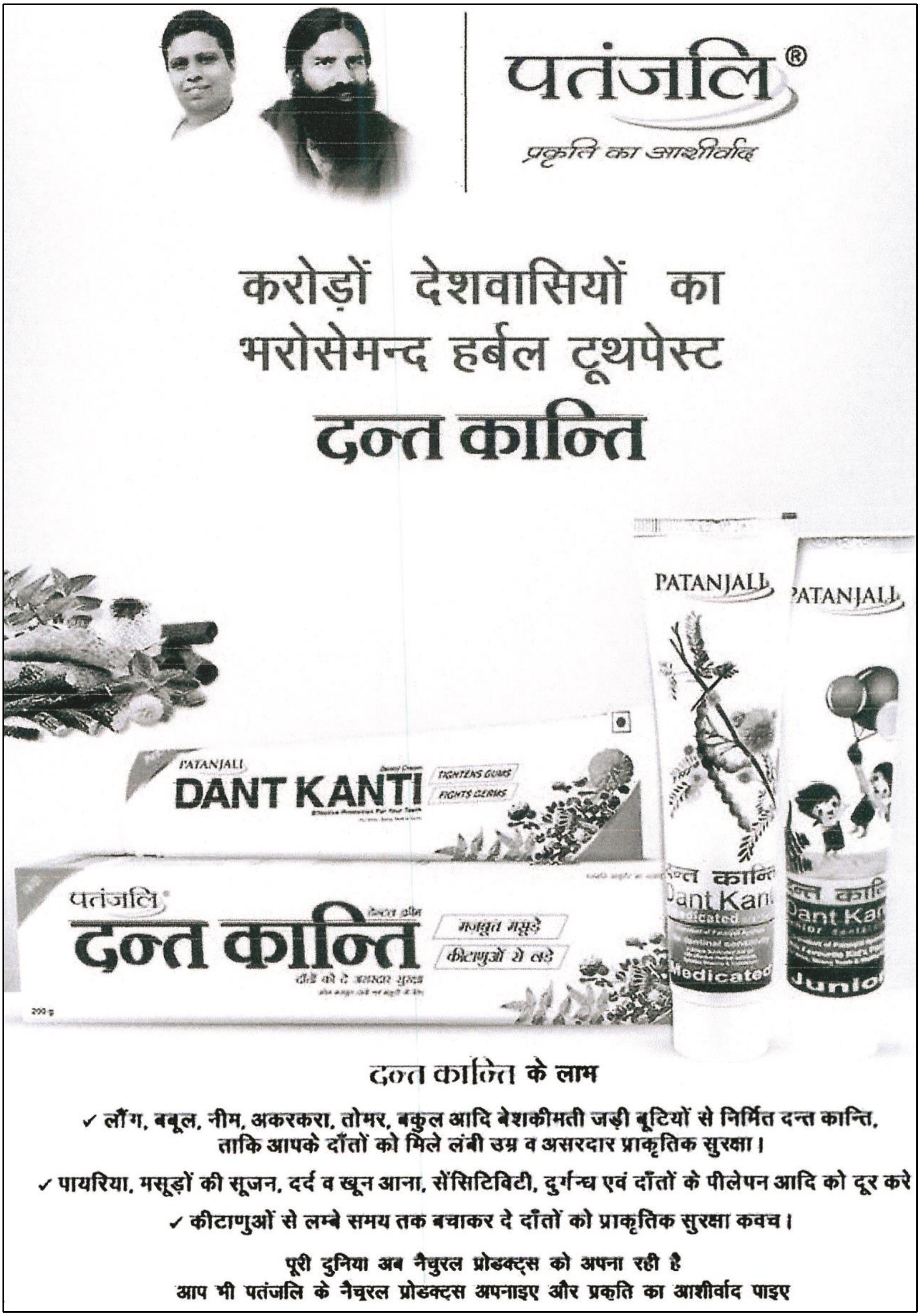

३.१ इस विज्ञापन में क्या विज्ञापित है ? (२)

३.२ निम्नलिखित वक्य को अपने शब्दों में लिखिए ।

३.२.१ प्रकृति का आशीर्वाद । (२)

३.२.२ कीटाणुओं से लंबे समय तक बचाकर । (२)

३.३ करोड़ो देशवासियों का भरोसेमन्द को क्यों लिखा गया है ? (४)

३.४ विज्ञापन के अनुसार पूरी दुनिया क्या कर रहे है (४)

३.५ इस विज्ञापन में दन्त कान्ति के लाभ क्या है ? (६)

३.६ पतंजलि क्यों प्रसिध्द है ? (४)

[२४]

प्रश्न ४

निम्नलिखित वित्र को ध्यान पूर्वक देखकर प्रश्नों का उत्तर दीजिए ।

[Source: <http://cartooncall.blogspot.com>]

४.१ कार्टून का चित्र वर्णन कीजिए ? (४)

४.२ इस कार्टून को सही शीर्षक दीजिए ? कारण बताइए । (४)

४.३ यह व्यक्ति क्या और क्यों बोल रहे हैं ? (४)

४.४ यह कार्टून किसने बनाया ? (२)

४.५ कार्टून का क्या सन्देश है ? (२)

[१६]

Total: 80 marks

IEB Copyright © 2019